नन्दलाल तिवारी

नागौर जिले के नीमड़ी कलां में 5 जनवरी, 1940 को एक निर्धन परिवार में जन्मे नन्दलाल तिवारी ने वर्षों की अथक साधना से आयुर्वेद की आठ जड़ी-बूटियों को मिलाकर एक ऐसा योग तैयार किया है जिससे केंसर के उपचार में सफलता मिली है। कर्कटोल नामक इस आयुर्वेदिक योग से श्री तिवारी गत बीस वर्षों में सैंकड़ों रोगियों को इस जानलेवा बीमारी से मुक्त कर नया जीवन दे चुके हैं।

श्री तिवारी की आयुर्वेद में बचपन से ही रुचि थी। वे इस क्षेत्र में कुछ ऐसा कर दिखाना चाहते थे जिससे असाध्य रोग से ग्रस्त आम आदमी लाभान्वित हो सके। यही कारण था कि आसाम व दार्जलिंग में चाय बागानों में काम करने के साथ वे जंगलों में उपलब्ध वनस्पतियों और आयुर्वेद ग्रन्थों का अध्ययन करते रहे। उन्होंने सन् 1984 में वैद्य विशारद और सन् 1992 में आयुर्वेद रत्न की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने जंगलों में रहने वाले आदिवासियों के परम्परागत अनुभवों से भी वनस्पतियों की जानकारी प्राप्त की और अपने व्यापक अध्ययन अनुभव के आधार पर यह योग तैयार किया।

जयपुर निवासी श्री तिवारी के पास ऐसे कैंसर पीड़ित रोगियों का विवरण सुरक्षित है जो इस योग का सेवन कर कुछ ही माह में और अधिकतम डेढ़-दो वर्षों के भीतर पूरी तरह स्वस्थ हो गये। देश-विदेश के ऐसे रोगियों में ब्रिस्टल (ब्रिटेन) निवासी श्रीमती यशु अमलानी भी शामिल हैं जिन्हें ब्रिटेन के प्रतिष्ठित 'मेम्बर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर' (एम.बी.ई.) अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। कैंसर मुक्त हुई श्रीमती यशु अमलानी ने देश-विदेश के ऐसे अनेक कैंसर रोगियों से साक्षात्कार कर एक वीडियो फिल्म तैयार की है जो श्री तिवारी की आयुर्वेदिक चिकित्सा की बदौलत मौत के मुंह से लौटकर नई जिन्दगी जी रहे हैं। कैंसर के उपचार में श्री तिवारी की सफलता से प्रेरित होकर देश-विदेश के कुछ कैंसर अस्पतालों ने भी इलाज के लिए कुछ कैंसर रोगी उनके पास भेजे हैं।

श्री तिवारी को अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, कनाडा, स्वीडन, स्विटजरलैंड, दक्षिण अफ्रीका, बेल्जियम, डर्बन, नेपाल, दुबई, बहरीन, केन्या, सिंगापुर आदि अनेक देशों में कैंसर रोगियों के इलाज के लिए बुलाया जा चुका है। उन्हें महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, दिल्ली आदि कई राज्यों के कैंसर रोगियों के उपचार में भी सफलता मिली है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली के पूर्व अपर प्राचार्य डॉ. जगन्नाथ शर्मा (एम.डी.) ने 'कादम्बिनी' में प्रकाशित अपने लेख में श्री तिवारी द्वारा ईजाद की गई 'कर्कटोल' औषधि से कैंसर के उपचार में कारगार सिद्ध होने का उल्लेख कर चुके हैं। आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली के भेषज विज्ञान विभाग (फार्माकोलॉजी) में किए गए परीक्षणों में श्री तिवारी की औषधि 'कर्कटोल' मानवीय उपयोग के लिए सुरक्षित विषाक्तता व दुष्प्रभाव रहित तथा निरापद पाई गई है। ब्रिटेन के एशिया टी.वी. ने कैंसर के उपचार में श्री तिवारी की उपलब्धियों पर उनका आधे घंटे का इन्टरव्यू प्रसारित किया है।

विशेष बात यह है कि डॉ. तिवारी के इलाज से पूर्ण स्वस्थ होने वाले रोगियों में से अधिकांशत: अंतिम अवस्था के कैंसर से पीड़ित रोगी थे। महंगे एलोपैथिक उपचार के मुकाबले श्री तिवारी के इलाज में प्रतिमाह सात सौ रुपये से भी कम खर्चा आता है। अधिकतर मरीजों की हालत में 2 माह में सुधार होना शुरू हो जाता है। श्री तिवारी गरीबों का इलाज नि:शुल्क करते हैं। करगिल की लड़ाई में शहीद हुए भारतीय फौज़ियों के परिजनों का नि:शुल्क उपचार करने की घोषणा भी वे कर चुके हैं। वे अपनी खोज 'कर्कटोल' और उसके उपचार परिणामों से विश्व स्वास्थ्य संगठन, प्रधानमंत्री कार्यालय, केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान विभाग, ड्रग कंट्रोलर ऑफ इंडिया, केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, केन्द्रीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (आई.सी.एम.आर.), सेन्ट्रल कौंसिल ऑफ आयुर्वेद एण्ड सिद्धा, टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल आदि को अवगत करा चुके हैं। मानव सेवा को समर्पित तिवारी इस समय एक ऐसा आयर्वेदिक योग बनाने में प्रयासरत हैं जिसे व्यक्ति की जीभ पर लगाते ही पता लग जाए कि उसे कैंसर है या नहीं। ●

आत्मदीप